P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राव कलाकारों का संगीत शिक्षण में योगदान

संजय कुमार बारेठ
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

मेरे शोध पत्र का सारांश ये है कि संगीत के शैक्षणिक क्षेत्र में राव कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है जिसका इतिहास गवाह है मेंने राजस्थान के राव कलाकारों का व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं उनके आलेखों के माध्यम से संकलन किया राव कलाकार देश दुनिया में जाने जाते है इनका गायन वादन एवं नृत्य की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है।

मुख्य शब्द : राव जाति, राव कलाकार, गायन, वादन, सेवायें, योगदान, वाद्य, गीत, राजस्थान, जन्म, संगीतज्ञ, शिक्षा।

प्रस्तावना

राव राजपूतों के याचक तथा राज दरबारी रहे हैं। इस जाति के लोग राजाओं के दरबार मे गा बजाकर राजाओ को खुश करते थे तथा राजा खुश होकर इस जाति के लोगो को इनाम प्रोत्साहित करता था। राव समाज का संगीत से सम्बन्ध कई पीढ़ियों से है। इनका व्यवसाय तथा जीविकोपार्जन का साधन संगीत ही रहा हैं। राव समाज के लोग राजाओं के दरबार में गा बजाकर अपना जीवन चलाते थे। इनका रहन–सहन, खान पान आदि राजदरबारों के जैसा था क्योकि इस समाज के लोग राजदरबारों मे रहते थे। इनका पालन–पोषण भी राज दरबारो में होता था।

इनके खाने–पीने तथा रहने की व्यवस्था दरबार करवाता था । तथा इस जाति के लोग गाने बजाने के साथ–साथ राजकविताये भी करते थे। जिससे राजाओ मे वीरता उत्साह, धैर्य, क्रोध जैसे भाव प्रकट हो जाते थे । वर्तमान मे राव जाति का संगीत समयानुसार बदलता जा रहा हैं। राव जाति की उत्पत्ति ब्रह्मभट्टो से मानी जाति है, अपने कार्यो से यह जाति अलग–अलग नामो से पहचानी जाने लगी ।

राजपूतकाल में इन लोगो की जागीरे भी राजस्थान में हैं। राजपूत काल मे राव जाति के लोग राजाओं के दरबारो में गाने–बजाने का काम करते थे तथा राजाओं के साथ इनकी जागीरे भी होती थी । तथा आज भी देखने को मिलती हैं। रियासतों एवं राजाओं मे पूर्व ऐसा नियम था जो कि लोग उनके राज्य जमाने में अपना आत्मोसर्ग किया, उनको पुश्त–पुश्त गुजारे के लिए यथा योग्य जागीरें भी दी हैं। और समयानुसार उनमें राज्य कार्य भी लेते रहे हैं। मगर काम का मुवाजा तनख्वा की शक्ल मे रखा, जागीरे की नही।[1] मीन पुराण भूमिका पृष्ठ 64 से 68 तक मे लिखा है कि कृतध्न भाट, आलनसी का दुल्हेराय से मिलकर रामगढ़, (मांच) के तालाब में दिवाली पर श्राद्ध करते समय आक्रमण कराया जिसमें राजा मय साथियों व परिवार के साथ मारा गया। बाद में दुल्हेराय ने भाट एवं राव को मार डाला और आलनसी को रानी सती होने लगी तब सबको आदेश किया कि जो इन रावों का मान करेगा अथवा मानेगा वही निवेश जो जायेगा। बस वही फिर तमाम रावों का राज्यों में सम्पूर्ण समाजो ने बहिष्कार किया और राष्ट्रवाद के फलस्वरूप बारेठ, राणा आदि विशेषणों से अलंकृत किया। अंत में दूसरे मीना क्षत्रियों ने इन रावों की ऐवज में कई अपने अन्दर से व्यक्ति चुन–चुन कर नवीन राव समाज का निर्माण किया और पूर्ण भाट राष्ट्र सेवक रहे उनके साथ इनको भी मिला दिया ।

अलाउदीन खिलजी की सेना के सेना नायक महिमा और गुबरू नामक थे जो शोभनपुर (अलवर राज्य) के मीना राज्य के पुत्र थे महिमा शाहा ने सेना लेकर दक्षिण विजय को और उसी सिलसिले में वह गुजरात गया। वहॉ के राजा की पुत्री चित्ररूपा इस महिमा पर मुग्ध होकर साथ चली आई। मगर इसको बादशाह देख जनान खाने में दाखिल कर दिया मगर वास्तविक प्रेम के वशीभूत होकर वह किसी युक्ति से शाही महल से निकल पड़ी, जिसके लेकर महिमा रणथम्भौर के प्रसिद्ध राजामीर से बादशाह ने महिमा को मान्गा तो यह उत्तर दिया कि तन धनगढ घर से सब जाये पै महिमा पंतशाह न पावे वीर बचन रू

सिंह गमन, कदली फले इकबार तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढेना दूजी बार मुख्य सार यह है इस सिलसिले में शाही फौज 12 साल तक हम्मीर से युद्ध करती रही। अंत में एक कृतध्न सुखारणसी कामदार की करतूत से फिर समस्त मारे गये। जो शेष रहे उन्हीं मे से राव समाज की उत्पत्ती हुई।[2]

डांगी राव जी के वंशज ढ़ोली भी कहलाये।

राव ड़ांगी ने ढ़ोली जाति की लड़की से शादी की तत्त सन्तान कही ढ़ोली तो कही डांगी नाम से बसते है। राव डांगी जी के वंशज ढ़ोली कहलाये।

किसी की मृत्यु होने पर उनके घर के बाहर ढ़ोली ढ़ोलाकरी ताल बजती है।

जन्म की खुशी हो या मरने का गम ढ़ोल की थाप बता देती है।

पहले शादी विवाह, त्यौहार, उत्सव से लेकर देव स्थलों में ढ़ोल बिना कोई कार्य संपन्न नही होते थे, लेकिन बदलते परिवेश में ढ़ोल के अस्तित्व पर खतरे के बादल मंडराने लगे है।

गांवों में ब्याह शादी और अन्य अवसरों पर ढ़ोल बजाकर आजिविका कमाने वाली राजस्थान की जाती है।

साहित्यलोकन

राजस्थान के राव कलाकरों का साहित्य उम्दा प्रकार का होता था जिसमें रद्युवीर सिंह, सीतामऊ मालवा मीनपुराण में मिला है। साथ ही वैद्यकवि ठा. गणपति सिंह –गनराज योधा ठि. झागसी नोसल, अजमेर ने भी इनके साहित्य का वर्णन किया है। अभी तक मुझे इन पुस्तकों का सहयोग मिला है।

राजस्थान में राव जाति

राव जाति के लोग राजस्थान के चारों तरफ बसे हुये हैं। राजस्थान के अनेक शहरों में, छोटे–छोटे गाँवों में, ढाणियों में, कस्बों में इस समाज के लोग निवास करते हैं। कुछ गाँवों, ढाणियों, व शहरों के नाम निम्नलिखित हैं –

कोटा	मण्डाना, सुल्तानपुर, इटावा, देवली, कनवास, खातौली, रामगंजमण्डी, भवानी मण्डी
बाराँ	अटरू, कलमण्ड़ा, किशनगंज, छबड़ा
झालावाड़	खानपुर, नूरजी गाज़र वाड़ा, घवाड़ी, शोजपुर, हरीगढ़, मूज़ला, अकलेरा, सांगोद, बत्तावर
बून्दी	के. पाटन, तालेड़ा, सुवासा, नमाना, खटकड़, बरुन्धन, हिण्डोली, अजेता, कापरेन, अरडाना, बासनी, उमर, निमोदा, बुधिंया, इन्द्रगढ़, लाखेरी, करवर, देई, नैनवा, रड़ी–चड़ी, गर्जनी, लक्ष्मीपुरा, बांसी, दुगारी, चित्तावा
भीलवाड़ा	जहाजपुर, शक्करगढ़, शेरपुरा, रावतखेड़ा, देवली, सरसिया, शिवगढ़, मोहनपुरा, मेड़िया, खोहराकलां, अमरवासी, पण्डेर, बिजौलिया, लुहारीकलाँ, धौड़, कुराड़िया, टिठौड़ामाफी, बेई, गाड़ौली, गोरमगढ़,
	महुआ, मानपुरा, इन्टूदा, टोला, अमरगढ़, श्यामपुरा।
चित्तौड़गढ़	कन्थारिया, बलदर खाँ, बस्सी, पालका, निम्बाहेड़ा,
अजमेर	केकड़ी, बाजटा, नासिरदा, मालेड़ा, किशनगढ़, थावला, रामथला, गठियाली, जुनिया, आमली, पार्लिया, कालाखेत, साँवर, चित्तिवास, रामपल्ली, सरवाड़, मालपुरा, डिग्गी, किशनगढ़, नसीराबाद, बहेड़ा, मोलकिया, नेगड़िया
टोंक	ड़ारड़ा हिन्द, नटवाड़ा, पराना, सेदरी, जोंला, झिलाई, निवाई, उनियारा, राजकोट, आवां, दूनी, घाड़, सतवाड़ा, सन्थली, बन्थली, रूपरा, सुरेली, बनेठा, वनस्थली
सवाई माधोपुर	आदल वाड़ा कला, मेनपुरा, सारसोप एण्ड़ा, बन्धा श्यामपुरा, चकेरी, रामड़ी, चौकी, हिन्दुपुरा, असथोली।
जयपुर	चाकसू, बस्सी, शाहपुरा, कोटपुतली, मुण्डिया, बधाना, कोथुन, गोठड़ा, माजनपुर, दोसरा। व उदयपुर, प्रतापगढ़, गंगानगर, बाड़मेर, नागौर, जोधुपर, चित्तौडगढ़ में यह जाति निवास करती है।

पं0 भगवती प्रसाद जी वर्मा

इनका जन्म 5 दिसम्बर 1956 को राजस्थान के उदयपुर जिले में हुआ है। इनके पिता का नाम पं0 कालिका प्रसाद जी तथा माता का नाम लक्ष्मीबाई था। इन्होने सर्व प्रथम वायलिन की शिक्षा रमाकान्त जी से प्राप्त की फिर पं0 रामनारायण जी से गण्डा बन्धवाया।

इन्होने वायलिन में अलंकार किया तथा आकाशवाणी से ए ग्रेड़ कलाकार है, पं0 जी ने उदयपुर आकाशवाणी में वायलिन के कई कार्यक्रम दिये है। 1980 मे भारतीय आकाशवाणी प्रतियोगिता मे इन्होने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इनका कहना है कि जितना रियाज करते है। उतना ही संगीत निखरता है । इनके पिताजी पं0 कालिका प्रसाद जी एक श्रेष्ठ सांरगी वादक तथा गायक थे। पं0 जी ने 1975 में राजस्थान युवा संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिसमें विजय राजे सिंधिया ने सम्मानित किया। इन्होने एक नये वायलिन का आविष्कार किया जिसका नाम इन्होने बेला सांरगी नाम दिया हैं। जिसमे मुख्य तार पॉच है। तथा कुल 26 तार हैं, जिसमें 16 तरबे लगी हुई हैं। वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर जिले मे अपनी संगीत की शिक्षा दे रहे हैं।

हनुमान भारती

इनका जन्म 24.06.1961 को राजस्थान के कोटा जिले में हुआ है। इनके पिता का नाम किशन बिहारी तथा माता का नाम शान्ती देवी है इनकी शिक्षा कोटा जिले में पिताजी के लाड–प्यार के साथ सम्पन्न हुई। इनके पिताजी संगीत के प्रेमी थे और संगीत के क्षेत्र में गायन वादन के कलाकार थे भारती जी के सांगीतिक पारिवारिक वातावरण से संगीत में रूचि जाग्रत हो चुकी थी।

हनुमान भारती जी ने तबले की शिक्षा अपने गुरू श्री नन्द किशोर जी से प्राप्त की जिन्होने अनेक शिष्य तैयार किये। नन्द किशोर जी के शिष्य आज भी संगीत के क्षैत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। जिनमे प्रमुख नाम हैं– घनश्याम राव, दिनेश, पण्डित, मोहन लाल पारासर है। भारती जी ने गायन की शिक्षा पण्डित मोहन लाल पारासर जी से प्राप्त की।

भारती जी कोटा जिले की श्रीपुरा गर्ल्स हाइ सैकण्डरी, महारानी गर्ल्स, हाई सैकण्डरी, भीम मण्डी गर्ल्स हाई सैकण्डरी, श्रीराम रेंस इण्डस्ट्री मे तबला संगतकार के रूप में कार्य किया ।

1983 से जयपुर के कत्थक कला केन्द्र मे तबला संगतकार के पद पर कार्यरत है। ये आकाशवाणी व दूरदर्शन के ए ग्रेड़ कलाकार हैं। हनुमान भारती जी को संगीत शिक्षा का मार्गदर्षन उनके चाचा गणेश दत्त ने दिया । भारती जी ने अनेक गुरूओं को सुन कर अपने ही तरीके से उसमें नई शैली का विकास किया वो जो भी कुछ बजाते है अपनी ही शैली बजाते है। उसमें अपना ही तरीका अपनाते हैं। उनका कहना है कि कालाकार प्रस्तुति भाव के साथ होनी चाहिए। बिना भाव के संगीत निरर्थक हैं।

तेजकरण जी राव

पं0 नवल किशोर जी के पुत्र तेजकरण जी का जन्म 1946 में हुआ । गायन की शिक्षा इनेक पिता से मिली थी पिता की गायकी का अनुसरण करते हुए अपनी प्रतिभा से गायन मे दक्ष हुए 1982 में गान्धर्व महाविद्यालय से संगीत अंलकार की परीक्षा उत्तीर्ण की । 1978 से आकाशवाणी केन्द्र से मान्य कलाकार थे। सुगम संगीत, भजन, गजल तथा राजस्थानी लोक गीतों के गायन में कुषल थे। 1982 से दूरदर्शन केन्द्र, मुम्बई, दिल्ली, जयपुर, से इनके गायन के कार्यक्रम प्रसारित हुये थे। युवावस्था से ही देश के कई प्रमुख नगरो में अपने कार्यक्रमो के प्रस्तुतीकरण से अपनी प्रतिभा को उजागर किया।

पं0 नवल किशोर राव

इनका जन्म सन् 1905 में ग्राम ड़ाबरी (कोटा) मे हुआ। इनके पिता रामलाल एक कुशल कलाकार थे जिनसे इनको बचपन में ही संगीत शिक्षा मिली परन्तु अल्पायु में ही पिता के स्वर्गवास के कारण पं0 झालावाड़, आ गये जहॉ उन दिनो नरेश भवानी सिंह के नाम से भवानी नाट्यशाला चलती थी। इस नाट्यशाला में इनको काम मिल गया झालावाड़, में इन्होने मा. पुरूषोत्तम जी से संगीत की तालीम ली। राजकुमार राजेन्द्र सिह ने पण्डित जीसे संगीत की शिक्षा ग्रहण की। राजेन्द्र सिंह जी जब राजगद्दी पर बैठे तो उन्होने मास्टर नवल किशोर को अपना राज गायक नियुक्त कर दिया ।

पं0 कालिका प्रसाद

इनका जन्म 20 मई 1926 को उदयपुर में हुआ था। गायन की शिक्षा अपने चाचा बद्रीलाल से तथा सांरगी की प्रयाग संगीत समिति से सितार में प्रभाकर की परिक्षा उत्तीर्ण की। ख्याल, ठुमरी, टप्पा गायन के साथ–साथ हारमोनियम, तबला ढ़ोलक आदि वाद्यो को बजाने मे कुशल थे। किन्तु सांरगी वादन इनकी विशेषता रही । उदयपुर के राजकीय विद्यालय में आजीवन संगीत अध्यापक रहे और 1981 में सेवा –निवृत हुए थे इन्होने गायन में कई अच्छे शिष्य तैयार किये जिनमें निर्मला सनाढ्य, शकुन्तला पाण्ड्या चन्द्रा सनाढ्य (ये सभी महाविद्यालयों में व्याख्याता हैं लेखा दांव्या, देव की नन्दन, द्रामोदर, पुरूषोत्तम भट्ट ड़ागर बन्धु, ईमामुदीन, जियाउधीन लक्ष्मण प्रसाद वाले, ईमामुदीन, जियाउधीन लक्ष्मण प्रसाद जयपुर वालो, पुरूषोत्तम सरीखे ईत्यादी कलाकारों के साथ सांरगी की संगत की हैं।

पं रामदास राव

ये कोटा निवासी है इनका संगीत प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है । शास्त्रीय एवं सुगम गायन में हाडोती क्षैत्र के दिग्गज कलाकार है । ये गजल, भजन व माण्ड गायन के श्रेष्ठ कलाकार है। यह राजकीय संगीत माध्यमिक प्रभाकर विद्यालय रामपुरा कोटा में प्राचार्य के पद पर रह चुके है। इन्होनें ऑल इण्डिया कॉम्पीटीशिन 1981 में स्वर्ण पद प्राप्त किया। जो कि किरण संस्था आजाद द्वारा एम.पी कटनी में संगीत कार्यक्रम आयोजित हुआ था। तीन वर्ष तक लगातार शास्त्रीय गायन में बेस्ट कला सिंगर अवार्ड प्राप्त किया। सन 1967, 1968, 1969 तथा सन् 1980 में सुरसिंगार संसद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सुरमणि की उपाधी मिली।

राव कलाकारों द्वारा वाद्य यन्त्रो का प्रयोग

राव कलाकार अपने संगीत में सभी प्रकार के वाद्य यन्त्रों का प्रयोग करते हैं तथा चारों प्रकार के वाद्ययन्त्र, सुषिर, ततवाद्य, घनवाद्य, अवनद वाद्यों का वादन करते हैं।

सुषिरवाद्य में – बांसुरी, त्रर्मपिट, शहनाई, कलारनेट, ब्रास,, हारमोनियम, आदि वाद्य यन्त्र बजाते हैं।

ततवाद्य में – सारंगी, वायलिन, गिटार, सितार, जैसे वाद्य बजाते हैं।

अवनद वाद्य में – नंगाड़ा, ढोलक, तबला, ड्रम, नाल, पखावज, जैसे वाद्यों का वादन करते हैं।

घनवाद्य में – करताल, खंजरी, मंजीरा, खडताल जैसे वाद्यों का वादन करते हैं तथा अपने संगीत में प्रयोग करते हैं।

राव समाज का वर्तमान परिवेश में बदलता हुआ संगीत का स्वरूप

वर्तमान में राव कलाकारों द्वारा संगीत मे किये गये प्रयोग – इस जाति के लोग राजाओं के काल में गा–बजाकर अपना जीवन चलाते थे। यह लोग राजदरबार में रजवाड़ी गीत, वीरता के गीत, प्रेम सम्बन्धी गीत गाते थे, तथा राजाओं को नृत्य दिखाकर खुश करते थे। वाद्य वादक अपने वाद्य यंत्र को बजाकर राजाओं का मनोरंजन करते थे, और राज शासक इन कलाकारों को इनाम देता था, तथा कलाकारों का जीवन चलता था, राजपूत काल में इस जाति के लोगो को शिक्षा प्राप्त नही थी, इस जाति को राजा केवल मनोरंजन का साधन मानते थे। आधुनिक काल में इस जाति ने शिक्षा के माध्यम से अपनी कला का अच्छा विकास किया है। इस जाति के लोग आकाशवाणी केन्द्र, रेड़ियो, टेलीविजन में गाते बजाते है और इस जाति के लोग स्कूल, कॉलेजो मे संगीत विद्यार्थियो को शिक्षा प्रदान कर रहे है। हालांकि शिक्षा की कमी के कारण इन लोगो को सरकार से कोई अच्छा प्रोत्साहन नही मिल पाया है। इसका मूल कारण शिक्षा का अभाव है। आज

कई अच्छे कलाकार गॉवो में रहते है। वो केवल गा–बजाकर अपना मनोरंजन करते है जबकि राव समाज के लोग जो गाँवो में बसे हुये है, उनको शास्त्रीय गायन व वादन का अच्छा ज्ञान प्राप्त है परन्तु उनके पास शिक्षा की कमी है। इसलिये ये लोग आगे नही बढ़ पाये है। अगर इस जाति के लोगो को सरकार से अपनी कला का लाभ उठाना है तो अपनी कला के साथ–साथ शिक्षित होना अतिआवश्यक है। आज राव जाति के लोग फिल्म दुनिया में भी काम कर रहे है।

इस प्रकार संगीत के क्षेत्र में राव जाति का अच्छा योगदान रहा है। राव जाति के कलाकारों ने समय के अनुसार अपनी कला मे बदलाव किया है। इन्होंने लोक जनरुचि के अनुसार अपनी रचनाये बनाई है तथा उनको समय के अनुसार प्रस्तुत किया है आज इस जाति के लोगो ने संगीत के क्षेत्र में अपनी अच्छी पहचान बना ली है समय के अनुसार इस जाति के लोगो ने संगीत का बदलाव किया है।

विभिन्न तकनीकियों का परम्परागत संगीत पर प्रभाव

वर्तमान में आधुनिक तकनीकियों का संगीत क्षेत्र में बहुत गहरा प्रभाव पडा है। जिस प्रकार पहले आवाज को दूर– दूर तक पहुचाने के लिये कडी साधना तथा आवाज को सुरीली बनाने मे बहुत मेहनत करनी पडती थी। जो कि आज आधुनिक तकनीकियों के माध्यम से सुरीली बना देते है। जो कि इसके लिये पहले से कडी मेहनत करनी पडती है तथा टेपरिकार्ड, ग्रोमोफोन, माइक्रोफोन, आदि ने संगीत क्षेत्र को प्रभावित किया है। आज टी.वी तथा सी.डी के माध्यम से संगीत के गायन, वादन तथा नृत्य रिकॉर्ड को अच्छा सुना, तथा देखा जा सकता है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी बहुत लाभान्वित हो रहे है।

जबकि प्राचीन काल में केवल गुरू के सामने ही सिखा जाता था। आज आधुनिक तकनीकियों ने संगीत को बहुत लाभान्वित किया है। आडियो / विडियो के माध्यम से संगीत के विद्यार्थी को बहुत लाभ प्राप्त हो रहा है। तथा इन्टरनेट के माध्यम से विद्यार्थीयो को सब जानकारी प्राप्त हो जाती है।

यहाँ तक कि जो कला केवल गुरू सामने बैठकर देता था। वो कलायें इन्टरनेट के माध्यम से विद्यार्थी प्राप्त कर लेते है। परन्तु विद्यार्थी इससे वहाँ तक ही सीमित रह जाते है। वो एक अच्छे संगीतकार नही बन पाते। क्योंकि अच्छे संगीतकार बनने मे एक योग्य गुरू का होना जरूरी है। क्योकि संगीत की परम्परा गुरू शिष्य परम्परा है। आधुनिक तकनीकियाँ संगीत क्षेत्र में अच्छा योगदान दे रही हैं।

निष्कर्ष

राव कलाकारों के सांगीतिक योगदान को आमजन के समक्ष प्रकाश में लाना। इनके कार्य को विश्व स्तर तक पहुंचाना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *वैद्य कवि ठा. गणपति सिंह – गनराज योधा, ठि. झागपी. नोसल, अजमेर (राज.)*
2. *राजस्थानी जातियों की खोज – रघुवीर सिंह, सीतामऊ मालवा, मीनपुराण।*
3. *राजस्थान संगीतज्ञ और संगीतकार – राजस्थानी ग्रन्थाकार प्रताप सिंह चौधरी सोजत गेट जोधपुर*
4. *डांगी (डांगी के वंशज ढ़ोली हुए)*
5. *dayalsinghbhati.blogspot.com>2015/10*
   जगरण विशेष जन्म मरण के साथ ढ़ोल का अस्तित्व खतरें में http://m.jagran.com>uttarakhand>deh
   ढोली विकिपीडिया
6. *https://hi.m.wikipedia.org>wiki><ksyh*